राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

मई 2024 संस्करण

दामोदर घाटी निगम

इस माह के चयनित साहित्यकार

मन्नू भंडारी

लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म 03 अप्रैल 1931 को मंदसौर जिला (मध्य प्रदेश) के भानपुरा नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता श्री सुख संपतराय भंडारी साहित्य और कला प्रेमी थे इसलिए शिक्षा के साथ-साथ मन्नू भंडारी का साहित्यिक अभिरुचियों का भी विकास होता गया। मन्नू भंडारी की शुरूआती शिक्षा अजमेर में हुई और बाद में उन्होंने पश्चिम बंगाल के 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' से हिंदी भाषा और साहित्य में एम.ए की डिग्री हासिल की ।

लेखिका मन्नू भंडारी ने एम.ए की परीक्षा के बाद ही अध्यापन कार्य शुरू कर दिया और प्रध्यापिका बनकर कलकत्ता विश्वविद्यालय में अध्यापन को ही अपनी आजीविका का मुख्य साधन बना लिया।

कहानी-संग्रह - एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, श्रेष्ठ कहानियाँ, आँखों देखा झूठ, नायक खलनायक विदूषक
उपन्यास- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान, कलवा
फ़िल्म पटकथाएँ – रजनीगंधा, निर्मला, स्वामी, दर्पण
नाटक- बिना दीवारों का घर(1966), महाभोज का नाट्य रूपान्तरण(1983)
आत्मकथा - एक कहानी यह भी (2007), प्रौढ़ शिक्षा के लिएः सवा सेर गेहूं (1993) (प्रेमचंद की कहानी का रूपान्तरण)
मन्नू भंडारी की उपलब्धियां
वर्ष 1981 में महाभोज के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।
भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता द्वारा वर्ष 1982 में सम्मानित किया गया।
वर्ष 1982 में नई दिल्ली में 'कला-कुंज सम्मान' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
वर्ष 1983 में भारतीय संस्कृत संसद कथा समारोह द्वारा पुरस्कृत किया गया।
वर्ष 1991 में बिहार राज्य भाषा परिषद द्वारा सम्मानित किया गया।
वर्ष 2004 में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।
वर्ष 2006 में हिंदी अकादमी, 'दिल्ली शलाका सम्मान' से सम्मानित किया गया।
वर्ष 2007 में मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन में 'भवभूति अलंकरण' से सम्मानित किया गया।
केके बिड़ला फाउंडेशन ने उन्हें उनकी आत्मकथा 'एक कहानी ये भी' के लिए '18वां व्यास सम्मान' से पुरस्कृत किया।

साम्राज्य से स्वराज्य तक

विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर, जिन्हें वीर सावरकर के रूप में भी जाना जाता है, भारत में एक लेखक, कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ थे। 1922 में रत्नागिरी में हिरासत में लिए जाने के दौरान, सावरकर ने हिंदू राष्ट्रवादी राजनीतिक सिद्धांत बनाया जिसे हिंदुत्व के रूप में जाना जाता है। विनायक दामोदर सावरकर हिंदू महासभा में प्रमुखता का स्थान रखते थे।

वीर सावरकर ने 'मित्र मेला' के नाम से एक संगठन की स्थापना की जिसने लोगों को भारत की 'पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता' के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। जब उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी, तो उन्होंने सम्मानजनक उपसर्ग वीर को अपनाना शुरू कर दिया, जिसका अर्थ है "बहादुर।"

विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 28 मई, 1883 को महाराष्ट्र के नासिक शहर के पास भागूर गांव में दामोदर और राधाबाई सावरकर के मराठी चितपावन ब्राह्मण हिंदू परिवार में हुआ था । विनायक दामोदर सावरकर की मैना नाम की एक बहन और गणेश और नारायण नाम के दो अतिरिक्त भाई-बहन भी थे ।

उन्होंने फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र से बैचलर ऑफ आर्ट्स की पढ़ाई पूरी की। वे द ऑनरेबल सोसाइटी ऑफ़ ग्रेज़ इन, लंदन में बैरिस्टर के रूप में कार्यरत थे। उन्हें इंग्लैंड में लॉ की पढ़ाई करने का प्रस्ताव मिला और उन्हें स्कॉलरशिप की पेशकश भी की गई। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उन्हें इंग्लैंड भेजने और अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाने में मदद की। उन्होंने वहां 'ग्रेज इन लॉ कॉलेज' में दाखिला लिया और 'इंडिया हाउस' में शरण ली। यह उत्तरी लंदन में एक छात्र निवास था। लंदन में वीर सावरकर ने अपने साथी भारतीय छात्रों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए एक संगठन 'फ्री इंडिया सोसाइटी' का गठन किया।

26 फरवरी, 1966 को बॉम्बे (वर्तमान में मुंबई) में उनका निधन हो गया ।

ओड़िशा में प्रथमाष्टमी पर्व का महत्त्व

श्रीमती शाश्वती महापात्र
जनसंपर्क व सूचना विभाग, कोलकाता

पर्वपर्वाणी, पूजाव्रत, यानियात्रा के राज्य ओड़िशा के आराध्य देवता जगत के नाथ श्री जगन्नाथ महाप्रभू, जो ओड़िशा के लोगों के सुख-दुःख के साथी है । इनसान के जैसा लीला खेला करके महाप्रभू समग्र ओड़िशा के लोगों के मन में बीराजमान है, श्रीमंदिर में अनुष्ठित पर्वपर्वाणी और उत्सक आदि को ओड़िया लोगों ने अपने अपने घरों में पारंपरिक रीति में पालन करते हैं । उनमें से एक पर्व है प्रथमाष्टमी ।

मार्गशीर महीने के कृष्ण पक्ष अष्टमी तिथि में प्रथमाष्टामी पर्व पालन किया जाता है । इस पर्व को पढ़अष्टमी नाम से जाना जाता है । इस दिन समग्र ओड़िशा के प्रत्येक परिवारों में ज्येष्ठ संतान का पूजा होता है । उसके सुख, समृद्धि और दीर्घ निरामय जीवन के लिए स्वतंत्र पूजाविधी अनुष्ठित होता है ।

साधारणतः उस दिन प्रातः काल में घर का पहला संतान स्नान करने के बाद नया वस्त्र परिधान करते हैं और माँ उनके बदांपना करतें है । इस अवसर में पंच पल्लव और पंच रास्य में वरुण देवता को पूजा किया जाता है । उस दिन एडुरी पिठा बनता है, जो कि प्रथमाष्टमी के विशेषत्व है । छेना, गुड़ और नारियल में प्रस्तुत पुर को चाउल और उरद दाल में प्रस्तुत पिठा में भरा जाता है, जो कि एडुरी पिठा के नाम में जाना जाता है । उसमें हल्दी पत्ता का व्यवहार किया जाता है । इसलिए यह पिठा अत्यंत स्वादिष्ट, रुचिकर और सुगन्धित होता है । यह पर्व ओड़िशा के निजस्व पर्व है । उस दिन पहला संतान के मामा नया वस्त्र, मिष्टान्न और अन्य सामग्री के साथ बहन के घर आते है, घर के पहले संतान को पढ़ुआ करने के लिए । इसलिए मामा को अष्टमी बंधू कहा जाता है ।

केवल ओड़िशा के घरों में नहीं बल्कि श्रीमंदिर में भी प्रथमाष्टामी पर्व पारंपरिक रीति निति के हिसाब से मनाया जाता है । इस दिन श्रीमंदिर में मईलम के बाद महास्नान नीति संपन्न होता है । उसके बाद नया कपड़ा महाप्रभू को पहना जाता है और चन्दन लगाया जाता है । उसके बाद भगवान को आभूषणों से सुसज्जित किया जाता है । उसके बाद विभिन्न प्रकार के पिठा भगवानों को अर्पण किया जाता है ।

प्रथमाष्टामी पर्व महाप्रभू के मानवीय लीला खेला के एक प्रकृष्ठ उदाहरण है । परिवार के ज्येष्ठ संतान के जैसा समग्र विश्व के प्रमुख के रूप में महाप्रभू को पढ़ुआँ किया जाता है । ऐसा माना जाता है कि इस दुर्लभ दृश्य को चर्मचख्यु में दर्शन करने से मनुष्य का समग्र पाप नाश हो के वैकुंठ प्राप्ति का रास्ता सुगम होता है, जो कि शास्त्र में उल्लेखित है ।

“ पशयेद वा परया भक्त्या मुक्तः स्यात्पापवृदंतः ।
अन्ते विश्नुपुरं गच्छेत् सर्बरार्मप्रदं परम ॥”

प्रथमाष्टामी पर्व एक स्वतंत्र, सामजिक और परंपरा प्रचलित पारिवारिक पर्व है जो ओड़िशा वासी और श्रीमंदिर में महाप्रभू को एक धागा में बांधें रखता है ।

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दा तथा इसकी रोकथाम में भारत और दामोदर घाटी निगम की भूमिका

श्री आलोक कुमार
उप महाप्रबंधक (टर्बाइन अनुरक्षण),
डीवीसी, केटीपिएस

संदर्भ: -

जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के समक्ष सर्वविदित, अत्यंत गंभीर और सबसे बड़ी चुनौती है। एक अध्ययन के अनुसार, पृथ्वी के औसत तापमान कि वृद्धि औद्योगिक पूर्व स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक होने के परिस्थिति में विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ मानव के अस्तित्व पर भी खतरा उत्पन्न हो जाएगा। इसके अतिरिक्त पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में भी लगभग 8 इंच की बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जिससे तटीय क्षेत्र में बाढ़, महामारी और लोगों का पलायन हो सकता है । पूरी दुनिया और भारत को जलवायु परिवर्तन के कारण हुई प्राकृतिक आपदाओं से करोड़ो डॉलर की आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा है। इस आलेख में जलवायु परिवर्तन, इसके कारण, उससे उत्पन्न चुनौतियों और जलवायु परिवर्तन से निपटने में भारत और दामोदर घाटी निगम की भूमिका पर विश्लेषण किया गया है।

क्या है जलवायु परिवर्तन? :-

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव से है। ये बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं, लेकिन 1800 के दशक से, मानवीय गतिविधियाँ जलवायु परिवर्तन का मुख्य चालक रही हैं, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन (जैसे कोयला, तेल और गैस) के जलने के कारण, जो ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करता है जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी गर्म हो रही है, और जलवायु में बदलाव देखा जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन से प्रभाव: -

उच्च तापमान: - पिछले 150 वर्षों में वैश्विक औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। गरम हवाओ और तेज लू की लहरें , गर्मी से संबंधित मौतें और बिमरिया, जंगलो में आग लगने की घाटना, ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर का पिघलना, बढ़ते समुद्र स्तर, तीव्र तूफान जैसे कई अन्य खतरनाक परिणामों में वृद्धि देखि जा रही है।

वर्षा के पैटर्न में बदलाव:- पिछले कुछ दशकों में बाढ़, सूखा और बारिश आदि की अनियमितता काफी बढ़ गई है। यह सभी जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही हो रहा है। कुछ स्थानों पर बहुत अधिक वर्षा हो रही है, जबकि कुछ स्थानों पर पानी की कमी से सूखे की संभावना बन गई है।

वन्यजीव प्रजाति का नुकसान:- तापमान में वृद्धि और वनस्पति पैटर्न में बदलाव ने कुछ पक्षी प्रजातियों को विलुप्त होने के लिये मजबूर कर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, पृथ्वी की एक-चौथाई प्रजातियाँ वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती हैं। वर्ष 2008 में ध्रुवीय भालू को उन जानवरों की सूची में जोड़ा गया था जो समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण विलुप्त हो सकते थे।

रोगों का प्रसार और आर्थिक नुकसान:- जानकारों ने अनुमान लगाया है कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ और अधिक बढ़ेंगी तथा इन्हें नियंत्रित करना मुश्किल होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के अनुसार, पिछले दशक से अब तक हीट वेव्स के कारण लगभग 150,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

पर्याप्त भोजन की कमी:- जलवायु में परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि वैश्विक स्तर पर भूख और खराब पोषण में वृद्धि के कारणों में से एक है। कृषि उपज, मत्स्य पालन, फसलें और पशुधन नष्ट हो सकते हैं या कम उत्पादक हो सकते हैं। गर्मी का तनाव, चारा के लिए पानी और घास के मैदानों को कम कर सकता है।

गरीबी और विस्थापन:- बाढ़ शहरी झुग्गियों को बहा ले जा सकती है, घर और आजीविका को नष्ट कर सकती है। मौसम संबंधी आपदाएँ प्रति वर्ष करोड़ो लोगों को विस्थापित करती हैं, जिससे कई लोग गरीबी की चपेट में आ जाते हैं। इससे सामाजिक तनाव, संसाधन प्रतिस्पर्धा और शहरी केंद्रों पर तनाव पैदा हो सकता है, जिससे नीति निर्माताओं के लिए चुनौतियाँ पैदा हो सकती है।

<u>जलवायु परिवर्तन के कारण: -</u>

औद्योगिकीकरण:- जलवायु परिवर्तन में औद्योगिकीकरण की बड़ी भूमिका है। कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन को जलाकर बिजली बनाने से वैश्विक उत्सर्जन का एक बड़ा हिस्सा पैदा होता है। जीवाश्म ईंधन ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन (कार्बन डाइऑक्साइड ,सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड तथा अनेक प्रकार की अन्य ज़हरीली गैसें) करते हैं, जो ओज़ोन परत का क्षरण तथा भूमंडलीय तापमान में वृद्धि जैसी समस्याओं का कारण बनते हैं।

वनोन्मूलन:- निरंतर बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये वृक्ष काटे जा रहे हैं। आवास, खेती, लकड़ी और अन्य वन संसाधनों की चाह में वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, जिससे पृथ्वी का हरित क्षेत्र तेजी से घट रहा है, प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने की पृथ्वी की क्षमता कम हो जाती है और साथ ही जलवायु के परिवर्तन में तेजी आ रही है।

रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों का प्रयोग:- पिछले कुछ दशकों में रासायनिक उर्वरकों की माँग इतनी तेजी से बढ़ी है कि आज विश्व भर में 1000 से भी अधिक प्रकार की कीटनाशी उपलब्ध हैं। जैसे-जैसे इनका उपयोग बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे वायु, जल तथा भूमि में इनकी मात्रा भी बढ़ती जा रही है, जो कि पर्यावरण को निरंतर प्रदूषित कर घातक स्थिति में पहुँचा रहे हैं।

शहरीकरण:- मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई जैसे महानगरों में उनकी क्षमता से कई गुना अधिक आबादी निवास कर रही है, जिससे शहरों के संसाधनों का असीमित दोहन हो रहा है। जैसे-जैसे शहर बढ़ रहे हैं, वहाँ पर उपलब्ध भू-भाग दिन-प्रतिदिन ऊँची-ऊँची इमारतों से ढँकता जा रहा है, जिससे उस स्थान की जल संवर्धन क्षमता कम हो रही है। आवासीय और व्यावसायिक इमारतें कुल बिजली का आधे से अधिक उपभोग करती हैं, जो (कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस) से बनती है और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन करते हैं।

परिवहन में वृद्धि:- अधिकांश कारें, ट्रक, जहाज और विमान जीवाश्म ईंधन पर चलते हैं। यह ग्रीनहाउस गैसों, विशेषकर कार्बन-डाइऑक्साइड उत्सर्जन का एक प्रमुख योगदानकर्ता बनाता है। सड़क वाहनों का योगदान सबसे बड़ा है, साथ में जहाजों और विमानों से भी उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु भारत के प्रयास: -

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना:- इसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, सरकार की विभिन्न एजेंसियों, वैज्ञानिकों, उद्योग और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे और इससे मुकाबला करने के उपायों के बारे में जागरूक करना है। इस कार्ययोजना में 8 मिशन शामिल हैं-

राष्ट्रीय सौर मिशन
विकसित ऊर्जा दक्षता के लिये राष्ट्रीय मिशन
सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन
राष्ट्रीय जल मिशन
सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन

पेरिस समझौते के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान के अंतर्गत निम्नलिखित पांच अमृत तत्व (पंचामृत) प्रस्तुत किए हैं:-

2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता तक पहुंचना
2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 50% नवीकरणीय ऊर्जा से
अब से 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 बिलियन टन की कमी
2005 के स्तर की तुलना में 2030 तक अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता में 45% की कमी
2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करना

दामोदर घाटी निगम का योगदान:-

वर्तमान में दामोदर घाटी निगम की सौर उर्जा कि कुल संस्थापित क्षमता लगभग 14 मेगावाट है। अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देते हुऐ, वित्तीय वर्ष 30-31 तक सौर उर्जा कि कुल क्षमता को 3433 मेगावाट करने का लक्ष्य है। यह नवीकरण ऊर्जा और जलवायु कार्रवाई के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अक्षय ऊर्जा पर जोर देते हुए डीवीसी दो पंप स्टोरेज प्लांट भी जोड़ रहा है, एक लुगु पहाड़ (1500 मेगावाट) में और दूसरा पंचेत हिल (1000 मेगावाट)।

कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए डीवीसी अपने विभिन्न प्रोजेक्ट जैसे डीएसटीपीएस,एमटीपीएस और केटीपीएस मे बायोमास (समर्थ- थर्मल पावर प्लांटों में कृषि-अवशेषों के उपयोग पर सतत कृषि मिशन के तहत कोयले के साथ 5% बायोमास पेलेट का मिश्रण) कोफायरिंग शुरू की है/करने जा रही है।

स्टैक उत्सर्जन नियंत्रण (वायुमंडल में सॉक्स और नॉक्स की मात्रा कम करने के लिए) के तहत डीवीसी ने अपने सभी टीपीएस में एफजीडी (फ़्लू-गैस डीसल्फराइजेशन) और डी-एनओएक्स प्रणाली की स्थापना/कार्यान्वयन लगभग अंतिम चरण में है।

ऊर्जा दक्षता में सुधार लाने और ग्रीनहाउस गैस को कम करने के लिये डीवीसी के विभिन्न परियोजनाएँ ने पैट (प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार) योजना के तहत बेहतर उपलब्धि करते हुऐ ऊर्जा दक्षता ब्यूरो से ऊर्जा बचत प्रमाणपत्र प्राप्त की है।

डीवीसी ने अपने सभी पावर स्टेशन और कॉलोनी में पारंपरिक इंकेंडेसेंट बल्बों को स्मार्ट एलईडी लाइट से बदल दिया है। इस योजना के परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष हजारो किलोवाट उर्जा की बचत के साथ ग्रीनहाउस गैस(मुख्य रूप से कार्बनडाइ ऑक्साइड) के उत्सर्जन में कमी आएगी।

इलेक्ट्रिक वाहन के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए डीवीसी ने अपने विभिन्न पावर स्टेशन में ईवी चार्जिंग पॉइंट स्थापित किया है।

डीवीसी ने अपने वनीकरण कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 2,00,000 हेक्टेयर से अधिक वन और बंजर भूमि को वन आवरण के अंतर्गत लाया है, जिससे हजारो टन कार्बन कैप्चर में मदद मिलेगी। यह जलवायु परिवर्तन के वैश्विक आंदोलन में डीवीसी की जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सारांश/ आगे का रास्ता:-

हर कोई (हम, आप) जलवायु परिवर्तन को सीमित करने में मदद कर सकता है। हमारे यात्रा करने के तरीके से लेकर, हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली बिजली और हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन तक हम अंतर ला सकते हैं। हमें सतत विकास को अपनाना चाहिए, जो पर्यावरण के संरक्षण, संयम और सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। कॉप-26, 2021 ग्लासगो में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबसे पहले लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट (लाइफ) अभियान के विचार को विश्व के समक्ष रखा था। यह मिशन प्रत्येक व्यक्ति से ऊर्जा बचाने, पानी बचाने, एकल उपयोग प्लास्टिक को न कहने, सस्टेनेबल भोजन (बाजरा जैसे मोटे अनाज) को अपनाना, अपशिष्ट कम करना और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने की अपील करता है। अगर हम दुनिया को बदलना चाहते हैं, तो शुरूआत खुद से करें। जिम्मेदार व्यक्तिगत जलवायु कार्रवाई हमारे सामूहिक भविष्य की सुरक्षा की कुंजी है।

"वासुदेव कुटुंबकम" यही सबका नारा है ।। एक धरती, एक परिवार और एक भविष्य हमारा है ।।

फ्रिज में कुछ तंग हो रहा है

सुमन कुमार
सतर्कता विभाग, चन्द्रपुरा

फ्रिज में कुछ तंग हो रहा है। हर वस्तु में जंग हो रहा है।
गर्मी में कोई रहना न चाहे। बाहर पड़ा बेरंग हो रहा है।

किस को क्या फायदा हुआ घर घर में ये ढंग हो रहा है।
पता नहीं कैसा जादू चला। हर परिवार नंग हो रहा है।

आटा दाल दही सब पड़े हैं। आपस में हुड़दंग हो रहा है।
ऊपर से नीचे आगे पीछे। कुछ न कुछ भंग हो रहा है।

सुबह बनाना रात में खाना। यही सब के संग हो रहा है।
बड़े से बड़ा फ्रिज देखकर। हर परिबार दंग हो रहा है।

सोहल आदत छूटती नहीं। फ्रिज लेना उमंग हो रहा है।

हीट स्ट्रोक : लक्षण, उपचार और बचाव के उपाय

रंजीत कुमार चौबे
वरिष्ठप्रबंधक (संरक्षा) / संरक्षाप्रमुख
सीटीपीएस,दामोदरघाटीनिगम,चंद्रपुरा

गर्मी का मौसम में बिना सावधानी बरते घर से बाहर निकलना सेहत के लिए काफी खतरनाक साबित हो सकता है । लू लगने के कारण अक्सर डिहाइड्रेशन, लूज मोशन, उल्टी आना और शरीर में पानी की कमी जैसी परेशानियां देखने को मिलने लगती है, गर्मी से संबंधित बीमारी का सबसे गंभीर रूप तब होता है जब शरीर अपने मुख्य तापमान को नियंत्रित करने में असमर्थ हो जाता है। पसीना आना बंद हो जाता है और शरीर अब अतिरिक्त गर्मी से छुटकारा नहीं पा सकता है।

जैसे-जैसे शरीर में गर्मी जमा होती रहती है, व्यक्ति एकाग्रता खोना शुरू कर देता है और किसी कार्य पर ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती है, चिड़चिड़ा या बीमार हो सकता है, और अक्सर पीने की इच्छा खो देता है। अगला चरण अक्सर बेहोशी होता है और यदि व्यक्ति शांत नहीं होता है तो मृत्यु भी हो जाती है।

लक्षण :
भ्रम
बेहोशी
बरामदगी
अत्यधिक पसीना आना या लाल, गर्म, शुष्क त्वचा
शरीर का तापमान बहुत अधिक होना

ऐसे में आप कुछ एहतियात बरतकर और आसान घरेलू नुस्खों की मदद लेकर गर्मी का तनाव यानी हीट स्ट्रोक से बचने में कामयाब हो सकते हैं.
हीट स्ट्रोक अत्यधिक तापमान में लंबे समय तक रहने के कारण होता है और इसे तत्काल इलाज की जरूरत होती है। गर्मी का मौसम साल का सबसे कठीन मौसम होता है। हलाकि हर कोई आपने आपको इसके लिए तैयार करता लेकिन साल में यही वो समय जब सभी छुट्टीयों को भी इंजाय करना चाहते हैं। लेकीन यह गर्मी तमाम तरह की स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर भी आती है जिसमे सबसे प्रमुख हीट स्ट्रोक (लू लगना) होता है।

हीट स्ट्रोक क्या है ?

हीट स्ट्रोक अत्यधिक तापमान में लंबे समय तक रहने के कारण होता है और इसे तत्काल इलाज की जरूरत होती है। आमतौर पर डिहाइड्रेशन तथा शरीर के तापमान नियंत्रण प्रणाली की विफलता के कारण होता है। शरीर का तापमान अगर 104 फारेनहाइट से अधिक होता है तो इसे हीट स्ट्रोक का लक्षण माना जाता है। हीट स्ट्रोक के कारण सेन्ट्रल नर्व सिस्टम में भी काम्पलिकेशन देखने को मिलता है।

हीट स्ट्रोक आमतौर पर तब होता है जब शरीर में पानी और नमक की मात्रा कम हो जाती है और पसीना आना भी बंद हो जाता है। सामान्य लक्षणों में घबराहट, बेचैनी, मतली, दौरे, बेहोशी जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं कभी-कभी इंसान कोमा में भी चला जाता है। बेहोशी को पहला लक्षण माना जा सकता है।

प्रमुख लक्षणः

- शरीर का तापमान बहुत अधिक होना
- बहुत तेज सिरदर्द
- चक्कर आना और सर घूमना
- गर्मी के बावजूद पसीना न आना
- लाल, गर्म और सूखी स्कीन
- मांसपेशियों में कमजोरी लगना या ऐंठन का अनुभव
- मतली और उल्टी
- धड़कन का तेज होना
- साँस लेने में तकलीफ
- घबराहट और बेचैनी
- दौरे आना
- बेहोशी की हालत

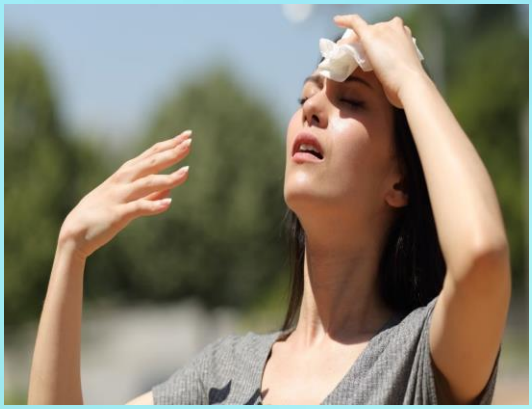

हीट स्ट्रोक के लक्षण दिखने पर क्या करें:

1.हीट स्ट्रोक से प्रभावित व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाएं।
2.जब तक चिकित्सा सहायता नहीं मिलता तब तक ठंडी जगह में रखें।
3.पैरों को ऊपर करके रखें।
4.यदि इंसान होश है तो ढ़ेर सारा पानी पीलायें या रिहाइड्रेशन पेय दिए जा सकते हैं।
5.यदि बेहोश हो, तो उन्हें निकटतम डॉक्टर के पास ले जाएं।
6.धीरे-धीरे शरीर को बर्फ के पैक से ठंडा करें, ठंडा स्प्रे करें या ठंडे पानी से स्पंज करें।

हीट स्ट्रोक से बचाव के उपाय:

1.एक्सरसाइज करने से पहले और बाद पानी जरूर पीयें। फल के जूस और पानी मिलाकर कम से कम 8 ग्लास तरल पदार्थ प्रतिदिन लें।
2.ठंडे पानी से स्नान करें और शावर लें तथा पर्याप्त मात्रा में आराम करें।
3.हल्का व तरल पौष्टिक भोजन खाएं। खाने में ककड़ी, तरबूज, नारियल, बेल को शामिल करें। पानी भी खूब पीयें।
4.हल्के रंग के और ढीले सूती कपड़े पहनें।
5.ज्यादा देर तक बाहर रहने पर शरीर और कपड़ों पर पानी का छिडकाव करें।
6.छाता या टोपी का उपयोग करके दोपहर 11 बजे से 3 बजे के बीच धूप में बाहर निकलने से बचें।
7.शराब, मीठे पेय और बहुत अधिक कैफीन लेने से बचें - ये डिहाइड्रेशन का कारण बनते हैं।
8. दिन में जब अत्यधिक गर्मी का समय हो तो किसी भी प्रकार की एक्सरसाइज से बचें।
9.बिना वेंटिलेशन वाली गाड़ी में बच्चों या बड़े बुजुर्गों को कभी न छोड़ें।
10.बच्चों और वृद्ध डिहाइड्रेशन के शिकार न हो इसका ध्यान रखें।

हाल ही में डीवीसी मुख्यालय के चिकित्सा विभाग ने भी इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किया है , उसे हम फॉलो करके हिट स्ट्रोक (लू लगना) यानी गर्मी का तनाव से बच सकते हैं।

मैं परेशान

श्री मलय चटर्जी,
उप प्रबंधक (रसायन),
डीवीसी

डीएसटीपीएस, अंडाल से पहली राजभाषा पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर, मुझे एक लेख लिखने के लिए कहा गया, लेकिन विज्ञान का छात्र होने के नाते मुझे ऐसा लगता है कि यह काम मेरे लिए लगभग असंभव है, हालांकि मैं बांग्ला साहित्य और कुछ हद तक अंग्रेजी का अच्छा अनुयायी हूं। मैंने हमेशा अपनी आंतरिक भावनाओं को अपनी कलम के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश भी की है, हालांकि पिछले 10-12 वर्षों से लेखनी का उपयोग धीरे-धीरे कम हो गया है क्योंकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आक्रमण के कारण इस धरती और प्राणी की प्राकृतिक सुंदरता को लूट लिया गया है। अब कलात्मकता और साहित्यिकता पर विज्ञान हावी होने लगा है। जहाँ तक साहित्य के स्वाद का प्रश्न है मेरे अनुसार राजभाषा और हिंदी साहित्य में बहुत बड़ा अंतर है। किसी लेखक की कलम से जो मार्मिक अनुभूति होती है, वह राजभाषा में गायब है, हालाँकि मेरी राय में किसी भी प्रकार के लेख में समय और समाज का संयोजन उसे पाठकों के दृष्टिकोण से पूर्ण बनाता है।

भावनाओं की अभिव्यक्ति यदि समय और सामाजिक दायित्व द्वारा समर्थित नहीं है तो वह आम लोगों की भाषा को प्रतिबिंबित नहीं करती है, क्योंकि किसी भी कलाकार के लिए विशाल इतिहास में वर्तमान युग और समाज को ध्यान में रखे बिना किसी भी रचनात्मकता को विकसित करना असंभव है। साहित्य में ऐसा कोई उदाहरण बमुश्किल ही मिलता है जो युग, काल और समाज से जुड़ा न हो।

ऐसा भी हो सकता है कि किसी की प्रस्तुति में वर्तमान समय और काल के लक्षण स्पष्ट हों और किसी की लेखनी में कुछ हद तक छुपे हुए हों, अलग-अलग देश और काल के लक्षण और गुणों में भिन्नता हो।

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि अगर कोई बड़ा दर्पण उपलब्ध हो जाए तो पूरे आकाश की तस्वीरें खींची जा सकती हैं, लेकिन यह संभव नहीं है, उसी तरह मेरे लिए भी अपनी हर भावना को अपने लेखन में व्यक्त करना संभव नहीं है,

शुरुआती दिनों में जब जीवन काफी सरल था और मैं एक छात्र था तब लघु पत्र पत्रिकाएँ, भित्ति पत्रिकाएँ पढ़ना दिनचर्या के अभिन्न अंग हुआ करते थे । ग्रीष्म अवकाश या शीतकालीन अवकाश और पूजा अवकाश में यदाकदा कबडडी खेल, फगुआ भी हुआ करते थे। मेरे गांव में पुआल की गंध आती थी, मील दर मील धान के हरे-भरे खेत, पूरी तरह से भरी हुई बैलगाड़ी के पीछे दौड़ना रोजमर्रा की बात थी पर ये सभी दृश्य आजकल गायब हैं। जब भी मैं उन सुनहरे दिनों में वापस जाने की कोशिश करता हूं, जो मैं अपने बच्चों को नहीं दे सकता तो काफी अफसोस होता है क्योंकि अब बाल्य जीवन के मायने बदल गए हैं, अब उनके लिए बाल्य काल का आशय सिर्फ क्लास टेस्ट रह गया है, विभिन्न विषयों की ट्यूशन है, जन्मदिन का निमंत्रण है, शॉपिंग मॉल का भ्रमण है, गगनचुंबी इमारतें हैं, आधुनिक सिग्नलिंग प्रणाली है, हाई स्पीड ट्रेन है। ऐसा लगता है कि जीवन नहीं एक चिड़ियाघर है, जहां लोग तो पिंजरे में बंद हैं पर जानवर आजाद हैं। वहां बायोमेट्रिक है और यह एक अजीब और हास्यास्पद स्थिति है जहां मैं अपने लेखन में समय और युग का मिलान नहीं कर पा रहा हूं, यह बहुत कष्टदायी अनुभव है। इस दरम्यान जब मैं अपने गाँव के दुर्गा मंदिर के विशाल मैदान में बिताए बाल्य जीवन की धमाचौकड़ी की सुखद यादों से बाहर आने की कोशिश कर रहा था और दो लोगों के बीच चैट बॉक्स के विषय पर अपने लेखन पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा था, जिनमें से एक चैट के एक छोर पर अपने लैपटॉप के पास बैठा है दूर इस्तांबुल में और दूसरा, सिक्किम के सुदूर गांव में मशीन के दूसरे छोर पर और वे दोनों एक विशेष समय में बातचीत कर रहे हैं और वहां की भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं, वहां के हर पल का विवरण दे रहे हैं और दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं।

चैट बॉक्स में एक का नाम एंजेला है और वह खुद को 23 साल की कामकाजी महिला के रूप में पेश कर रही है और वर्तमान में एक प्रसिद्ध टेक कंपनी से जुड़ी हुई है और दूसरे का नाम फ्रैंक है, जो खुद को 27 साल के अच्छे दिखने वाले हैंडसम टेक्नोक्रेट के रूप में पेश कर रही है और फ्रीलांसर एंटरपेनॉर, इसी बीच मेरी पत्नी ने मुझे रात के खाने के लिए बुलाया और मैं डाइनिंग हॉल में चला गया और धीरे से खाने की मेज पर आकर कुर्सी पर बैठ गया और उदासीनता से पत्नी से कहा कि क्या तुम जानती हो कि वास्तव में एंजेला दरअसल एक 37 वर्षीय तलाकशुदा सुनयना है और .... पर आगे मैं कुछ कहूँ इससे पहले ही मेरी पत्नी ने मुझे वाक्य पूरा करने का अवसर दिए बिना अचानक से कहा- "चैट बॉक्स का दूसरा व्यक्ति 45 साल का फरेबी व्यक्ति समीरन हो सकता है, जो फ्रैंक के छद्म नाम से चैटिंग कर रहा है।" मैंने आश्चर्यचकित होकर कहा- "तुम्हें कैसे पता चला कि वह 45 साल का था?" "अनुमान से" उसने धीरे से उत्तर दिया.....।

तुम्हें पता है मेरे प्रिय, समय बहुत कठिन है, तुम अपने लेखन में समय और युग का समन्वय नहीं कर पा रहे हो, हर प्रयास में तुम्हारे गाँव की नम धरती की गंध बार-बार वापस आएगी क्योंकि वहां कोई धोखा और झूठ नहीं था, लेकिन वर्तमान युग, एक युग है दिखावे से भरा और भेड़चाल युक्त, इसलिए सार यही कि आप समय को युग के साथ नहीं जोड़ सकते क्योंकि वर्तमान युग में असंतोष सबसे अधिक प्रबल है।

শ্রমিক

ভোরের আলো ফোটার সাথে
সকলের মতো ওরাও জেগে ওঠে।
পিপিলিকার ন্যায় বানিয়ে সারি
জীবন যুদ্ধে ওরা প্রতিদিন দেয় পাড়ি।
গেয়ে জীবনের জয়গান,
দিবারাত্র করে যায় ওরা শ্রম দান।
ওরা পরিষ্কার করে জঞ্জাল,
মাঠে মাঠে ওরাই চালায় হাল।
যুগেযুগে খেয়ে মালিকের চাবুক
কর্মরত তবুও ওরা চিতিয়ে রেখে বুক।
শত শত সাম্রাজ্যের ওরাই মেরুদন্ড,
থাকুক সিংহাসনে যে কোনো ভন্ড।
কালের নিয়মে যখন ভেঙ্গে পড়ে সব
আবার নতুন করে গড়ে তোলে ওরা, করে কলরব।
সমাজের ভিত গড়তে শক্ত,
দিয়ে যায় ওরা শেষ বিন্দু রক্ত।
করে যায় কাজ ওরা, না করে বিশ্রাম ক্ষণিক,
ওরা শ্রমিক।

श्री नरेन्द्र नाथ माझी
प्रबंधक (सीएंडआई),
बीटीपीएस, डीवीसी

इंजिनियर बिजय महापात्र
पिता: श्रीमती शाश्वती महापात्र,
सूचना व जनसंपर्क विभाग

करोमंडल एक्स्प्रेस तेजी से जा रही थी। चलती ट्रेन की एक बोगी में बैठे दो बच्चों ने अपने अध्यापकजी से कहानी सुनाने का आग्रह किया, 'सर, एक कहानी सुनाइए न। '

'आज से पच्चीस साल पहले की बात है। ' अध्यापकजी ने कहानी शुरू की- ' भुवनेश्वर स्टेशन के ओवरब्रिज पर फटे कपड़े पहिने लगभग छ: साल का एक बच्चा रो रहा था। स्टेशन पर घूमते दस साल के एक अन्य बच्चे ने इस बच्चे से पूछा, 'अरे, तुम क्यों रो रहे हो?

छ: साल के बच्चे ने सुबक कर कहा ' तीन दिन से खाया नहीं। भूखा पेट रोने के सिवाय क्या करें?'

'तुम्हारा नाम क्या है?'

कुछ उत्तर न देकर बच्चा और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

इधर तेरा कोई सगा है?

कोई भी नहीं। माता-पिता का मुंह देखा नहीं, भाई- बहिन हैं या नहीं, मालूम नहीं।

ठीक है मेरा भी कोई नहीं।

तुम रोओ मत। हम दोनों साथ रहेंगे। मैं तुम्हें खाने को दूंगा। मेरा नाम है रमजान।

सहानुभूति पाकर रोते बच्चे ने कहा, मेरा नाम रामल्यू है।

उस दिन से रामल्यू और रमजान मित्र बन गए। रमजान ज्यादा समझदार था क्योंकि रामल्यू से चार साल बड़ा था।

भूनेश्वर स्टेशन पर मद्रास मेल रूकी। कुछ लोग इसमें चढ़े कुछ उतरे। रमजान, रामल्यू का हाथ पकड़कर एक बोगी में चढ़ा। रमजान के हाथ में झाड़ू के सिवाय कुछ नहीं था। रामल्यू ने फुसफुसाकर रमजान के कान में कहा, ' टिकट बाबू क्या पकड़ेगा नहीं। '

हम जैसे बच्चों से कोई टिकट नहीं मांगेगा, तुम देख लेना।

ट्रेन चल पड़ी। रमजान ने झाड़ू से सफाई की। यात्रियों से उसने अपने श्रम का पारिश्रमिक प्राप्त किया। किसी ने पचास पैसे दी किसी ने पच्चीस। इस तरह पांच रूपये एकत्रित हो गए। रमजान ने रामल्यू के साथ-साथ खाए, छोले भटूरे, मूंगफली आदि।

रमजान ने रामल्यू से कहा, मेहनत करके कमाओ और सुख से खाओ। काम ही मेरा खुदा है। '

रमजान भाई, तुम मेरे सब कुछ हो। मैं भी मेहनत करूँगा। रामल्यू बोला। हाँ, इसके सिवा रास्ता ही क्या है? हमें चाकरी कौन देगा? रमजान ने कहा। उस दिन से मद्रास मेल में दोनों बच्चे डिब्बों में झाड़ू लिए जाने लगे, सफाई करने लगे और अपना खर्च निकालने लगे। एक दिन मूंगफली बेचने वाले दुसरे बच्चे ने रामल्यू से रूपए छीन लिए।

रामल्यू छोटा था। वह चिल्लाया। सुनकर भी किसी ने न्याय नहीं किया। लेकिन रमजान ने सुना, उसने काम बंद किया और भागा। उसने रामल्यू से जानकारी की और फिर उसने मूंगफली बेचनेवाले से कहा, 'छोटा और अकेला समझकर तुम इसे सता नहीं सकते। ' इतना कहकर उसने रूपए छीन लिए। मूंगफली बेचनेवाला चुप चुप न रहता तो क्या करता। वे अब दो थे।

मूंगफली बेचनेवाले लड़के ने कहा, 'मैं बदला लेकर रहूँगा आज नहीं तो कल । मेरे भी साथी हैं।
तीन चार दिन बीते होंगे कि मूंगफली बेचने वाले के साथ कुछ लड़कों ने रमजान और रामल्यू से मारपीट की। इस घटना के बाद रमजान वहां से भाग गया। बेचारा रामल्यू हताश और निराश रमजान के लिए भटकता रहा, कुछ नहीं खाया व आखिर, उसने दुसरे स्टेशन में ठहरकर फिर से ट्रेन की सफाई का काम अपना लिया।
शायद ही कोई क्षण हो जव वह रमजान को न याद करता हो। एक दिन रामल्यू को सफाई करते समय सोने की चेन मिली। रामल्यू ने यात्रियों से पूछा कि किसी ने यह नहीं कहा कि उसकी कोई चीज खोई है। कोई दावेदार न पाकर रामल्यू ने सोने की जंजीर जगन्नाथ जी का प्रसाद मानकर रख ली। उसके मन में दुख था कि वह जंजीर खोनेवाला दुखी होगा, सोचकर वह करता भी तो क्या करता ? रमजान की सलाह से वंचित था। रामल्यू ने उस जंजीर को बेच कर अच्छा काम करने का निश्चय किया।
रामल्यू ने जंजीर के धन का उपयोग किया। उसने पढ़ने में धन खर्च किया। फीस दी। पुस्तकें खरीदीं। अब वह कमाई से पढ़ाई करने लगा। पढ़ने में योग्यता से छात्रवृत्ति अर्जित की। हाई स्कूल, इंटर और बी.ए. पास किया। बी.टी. परीक्षा पास की। सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी। फिर उसे शिक्षक की नौकरी मिल गई। बच्चों में रामल्यू के प्रति आदर भाव बढ़ा।
अध्यापक जी ने कहानी कहना समाप्त किया। तो बच्चों ने उत्कंठा से पूछा, 'रामल्यू को रमजान मिला या नहीं। रामल्यू को बनाने में रमजान का योगदान सबसे अधिक था। परिश्रम करना उसने ही सिखाया था। मित्र के लिए उसने बदमाशों से झगड़ा किया था। मैं रमजान के बारे में नहीं जानता। लेकिन मैं तुम्हें रामल्यू से इसी ट्रेन में मिलवा सकता हूँ। अध्यापक जी बोले।
बच्चों ने कौतुहल से कहा, ' रमजान नहीं तो रामल्यू से ही मिलवा दीजिये। ' सर में कहा, 'बच्चों, रमजान को मैं भी खोज रहा हूँ। रामल्यू तुम्हारे सामने है। आज का रामास्वामी कभी रामल्यू था। आश्चर्य से बच्चों ने रामल्यू को देखा। कारोमंडल गाड़ी द्रुतगति से दौड़ रही थी।

दामोदर घाटी निगम

दामोदर घाटी निगम महान है।
हम बच्चों से लेकर बूढ़े तक सब इसके परिवार हैं।
बीजेपी से लेकर कांग्रेस तक डीवीसी के मेहमान है।
डीवीसी ने सबको रखा अपने संविधान में।
प्रधानमंत्रीयों जैसे नरेंद्र मोदी भी इसके मेहमान हैं।
डीवीसी ने भी दिया पूरे देश में बिजली।
डीवीसी ही है भारत देश का सबसे पहला बिजली निगम।
इसके बाद ही होती है बांकी बिजली कंपनियों के नाम शुरू।
I love D.V.C
Do you love too?

ईशु प्रसाद, जेआरएस,सैनिक स्कूल तिलैया
पुत्र- गजेंद्र प्रसाद,कार्यपालक (विद्युत),डीवीसी गिरिडीह, उपकेन्द्र

दामोदर घाटी निगम में श्री एस सुरेश कुमार, भा.प्र.से., अध्यक्ष महोदय के अध्यक्षता में डॉ बाबासाहेब आंबेडकर जयंती का अनुपालन किया गया।

दामोदर घाटी निगम अपने निगम सामजिक उत्तरदायित्व का अनुपालन सर्वदा करती आई है। पिछले चार दशकों से चिकित्सा विभाग द्वारा डीवीसी के संचालन क्षेत्रों नियमित रूप से स्वास्थ्य जांच और निगरानी शिविर आयोजित की जा रहा है।

डीवीसी गतिविधियाँ

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की कड़ी में दिनांक 17 अप्रैल, 2024 को डीएसटीपीएस, डीवीसी, अंडाल में "सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी - कैसे ?" विषयान्तर्गत हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

सीटीपीएस के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 08/05/2024 को राजभाषा अनुभाग द्वारा सभी विभागाध्यक्ष/कार्यालय प्रधान के मध्य प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) श्री अभिजीत घोष भी उपस्थित थे ।सीटीपीएस के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 08/05/2024 को राजभाषा अनुभाग द्वारा सभी विभागाध्यक्ष/कार्यालय प्रधान के मध्य प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) श्री अभिजीत घोष भी उपस्थित थे ।

श्री एस सुरेश कुमार, भा.प्र.से. , अध्यक्ष, डीवीसी ने 5 अप्रैल 2024 को एनपीटीआई (पूर्वी क्षेत्र), दुर्गापुर में 52 सप्ताह के इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम में डीवीसी की ओर से भाग लेने वाले स्नातक अभियंता प्रशिक्षुओं (जीईटी) को अपना शुभाशीष दिया।

डीवीसी ने कोलकाता स्थित डीवीसी मुख्यालय में सोलर पावर डेवलपर (एसपीडी), अवाडा इनक्लीन प्राइवेट लिमिटेड के साथ पीपीए पर हस्ताक्षर किए।

डीवीसी ने 22/03/2024 को बिस्वा बांग्ला कन्वेंशन सेंटर, न्यूटाउन कोलकाता में एक ओ एंड एम सम्मेलन 2024 का आयोजन किया। सम्मेलन में विद्युत क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लियाडीवीसी के अध्यक्ष, श्री एस सुरेश कुमार, आईएएस, मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए।

अप्रैल,2024 में सेवानिवृत्त कर्मियों की सूची

क्रम सं.	नाम	पदनाम	विभाग	केंद्र
1	श्री दीपांकर चौधरी	वरिष्ठ महाप्रबंधक	असैनिक	मैथन
2	श्री पल्लब बनर्जी	वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)	आतंरिक	कोलकाता
3	श्री साहमीम अख्तर	चार्जहैंड (एमटी) (पीजी)	ओएंडएम	सीटीपीएस
4	श्री देबाशीष चौधरी	चार्जहैंड [संचार](पीजी)	संचार	एमटीपीएस
5	श्री अशोक कुमार मंडल	सहायक	प्रणाली	पारेषण (मैथन)
6	श्री समीर बैन	सहायक नियंत्रक (यांत्रिकी) पीजी	ओएंडएम	एमटीपीएस
7	श्री दीपक कुमार पांडा	निजी सहायक (पीजी-2)	सचिवालय	कोलकाता
8	श्री प्रदीप कुमार डॉ	सहायक	ओएंडएम	डीटीपीएस
9	श्री रोबर्ट टाइटस	सहायक ग्रेड III	ओएंडएम	बीटीपीएस
10	श्री स्वपन साहा	स्किल्ड खलासी	मानव संसाधन	डीटीपीएस